आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिव मुनि जी महाराज

संक्षिप्त जीवनवृत्त

1. नाम	: शिव कुमार
2. पिता	: श्री चिरंजीलाल जी जैन
3. माता	: श्रीमती विद्यादेवी जैन
4. जन्म दिनांक	: 18 सितम्बर, 1942
5. जन्म स्थान	: रानियां {हरियाणा} ननिहाल पक्ष
6. पैतृक स्थल	: मलोटमण्डी जिला : मुक्तसर - पंजाब
7. वंश	: वैश्य ओसवाल
8. गोत्र	: भाबू
9. शिक्षा	: एफ.एस.सी. नॉन मेडीकल डी.ए.वी. कॉलेज जालंधर
	: एम.ए. (अंग्रेजी माध्यम) जे.वी. जैन कॉलेज, सहारणपुर
	: एम.ए. (दर्शन शास्त्र) पंजाब यूनिवर्सिटी, चण्डीगढ़,
	: पी.एच.डी. (भारतीय धर्मों में मोक्ष विचार जैन धर्म के विशेष संदर्भ में) पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला,
	: डी.लिट् (ध्यान एक दिव्य साधना विभिन्न धर्म के सभी गुह्य ग्रन्थों का गहन अध्ययन) भागलपुर युनिवर्सिटी, कलकत्ता
10. व्यवसाय	: रूई का व्यापार, लोहे की दूकान
11. दीक्षा	: 17 मई, 1972
12. नामकरण	: आदित्यमुनि जी म.सा.
13. दीक्षा स्थान	: मलोटमण्डी {पंजाब}
14. दीक्षा गुरू	: महाश्रमण राष्ट्रसंत श्रमण संघीय सलाहकार बहुश्रुत श्री ज्ञानमुनि जी महाराज
15. दादा गुरु	: आचार्य सम्राट आत्माराम जी महाराज
16. युवाचार्य पद	: 13 मई, 1987 पूना {महाराष्ट्र}
17. श्रमण संघीय आचार्य सम्राट पदारोहण	: 9 जून, 1999 अहमदनगर {महाराष्ट्र}
18. आचार्य पद चादर महोत्सव	: 7 मई, 2001 ऋषभ विहार, दिल्ली में
19. भाषा	: हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत, पंजाबी आदि
20. पद यात्राएं	: पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, दिल्ली, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, तमिलनाडू, जम्मू कश्मीर तक की करीब 45 हजार किलोमीटर की पद यात्रा
21. **शिष्य संपदा**	श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री श्री शिरीष मुनि जी महाराज
	युवा मनीषी मधुर गायक सहमंत्री श्री शुभम मुनि जी महाराज
	प्रवचन प्रभाकर श्री शमित मुनि जी महाराज
	आत्मार्थी श्री शौर्य मुनि जी महाराज
22. **प्रशिष्य**	मधुर गायक श्री निशांत मुनि जी महाराज
	परम सेवाभावी श्री शाश्वत मुनि जी महाराज
	साधनाप्रिय श्री शुद्धेश मुनि जी महाराज
	नवदीक्षित श्री शमेश मुनि जी महाराज
23. **प्र-प्रशिष्य**	नवदीक्षित श्री शुचित मुनि जी महाराज

नवदीक्षित श्री शंशात मुनि जी महाराज

24. **उपाधि**

युगपुरूष –	
आत्मज्ञानी सद्‌गुरूदेव –	
योगीराज –	सन् 2002
युगप्रधान –	सन् 2011 (भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह द्वारा)
आगम–अतिधन्वा	सन् 2012 (भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई)
राष्ट्रसंत –	सन् .... (पंजाब मुख्यमंत्री श्री प्रकाश सिंह बादल द्वारा)
आत्म–अनुशास्ता –	सन् 2013 (दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शिला दीक्षित द्वारा)
ध्यानगुरू –	सन् 2017 इन्दौर (मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश)
राष्ट्र गौरव –	सन् 2018 (अंतर्राष्ट्रीय सर्वधर्म महासंघ द्वारा)
तपसूर्य –	सन् 2018 उदयपुर (श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ)
अध्यात्म ज्योति –	सन् 2018 उदयपुर (तेरापंथ समाज द्वारा)
सूर्यरत्न विश्वसंत	सन् 2019 (सूर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट द्वारा)
आत्मानुशास्ता	सन् 2025 (गुजरात सरकार गृहमंत्री द्वारा)

Dr. A.P.J, Abdul Kalam World Peace Award 2020 (All India Council of Human Rights, Liberties & Social Justice)
LARGEST NUMBER OF WORKSHOPS ON MEDITATION (Golden Book Of World Record)

25. आचार्य श्री जी के निर्देशन व मार्गदर्शन में सम्पन्न अतिमहत्त्वपूर्ण कार्य –

: श्रमण संघ विकास फण्ड
: बृहद साधु सम्मेलन इन्दौर 2015

26. आचार्य श्री जी की प्रेरणा एवं उपदेश से निर्मित संस्थाएँ –

: अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रमण संघीय श्रावक समिति
: शिवाचार्य आत्म ध्यान फाउण्डेशन
: भगवान महावीर मेडिटेशन एवं रिचर्स सेन्टर
: श्री सरस्वती विद्या केन्द्र, नाशिक
: आदिश्वर धाम कुप्पकलां, पंजाब
: आत्म आनंद ध्यान केन्द्र, पुणे

27. आचार्य श्री जी की लेखनी से प्रस्तुत आगम एवं साहित्य –

1) आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी म.सा. के 22 आगम एवं समस्त साहित्य का सम्पादान
2) श्री आचारांग सूत्रम् (प्रथम श्रुतस्कंध)
3) श्री आचारांग सूत्रम् (द्वितीय श्रुतस्कंध)
4) श्री स्थानांग सूत्रम् (भाग एक)
5) श्री स्थानांग सूत्रम् (भाग दो)
6) श्री उपासकदशांग सूत्रम्
7) श्री अन्तकृ्शांग सूत्रम्
8) श्री अन्तकृ्शांग सूत्रम् (संक्षिप्त संस्करण)
9) श्री अनुत्तरौपपातिक सूत्रम्

10) श्री विपाक सूत्रम्
11) श्री निरयावलिका सूत्रम् (कल्पिका-कल्पावतंसिका-पुष्पिका-पुष्पचूलिका-वृष्णिदशा)
12) श्री उत्तराध्ययन सूत्रम् (भाग एक)
13) श्री उत्तराध्ययन सूत्रम् (भाग दो)
14) श्री उत्तराध्ययन सूत्रम् (भाग तीन)
15) श्री उत्तराध्ययन सूत्रम् (संक्षिप्त एक से छत्तीस पर्यंत)
16) श्री दशवैकालिक सूत्रम्
17) श्री नन्दीसूत्रम्
18) श्री अनुयोग द्वार सूत्रम् (भाग एक)
19) श्री अनुयोग द्वार सूत्रम् (भाग दो)
20) श्री दशाश्रुतस्कन्ध सूत्रम्
21) श्री आवश्यक सूत्रम् (श्रावक प्रतिक्रमण)

शोध गन्थ

1) भारतीय धर्मों में मुक्ति विशेष जैन धर्म के संदर्भ में (पी.एच.डी.)
2) ध्यान एक दिव्य साधना (डी-लिट्)

जीने की कला साहित्य

1) आ घर लौट चले
2) योग मन संस्कार (आहार, भाव प्रतिक्रमण, बाल संस्कार)
3) अमृत की खोज (श्रद्धा पर विशेष)
4) साधक व्रत आराधना (श्रावक के बारह व्रत पर विशेष)

ध्यान साहित्य

1) जैनागमों में अष्टांग योग
2) ध्यान पथ (विविध ध्यान विधियों पर प्रकाश)
3) आत्म : ध्यान स्वरूप एवं साधना
4) सिद्धालय का द्वार - समाधि
5) वीतराग विज्ञान, भाग 1 व 2
6) आत्म : ध्यान योग साधना (सचित्र योगासन)
7) ध्यान से ज्ञान, भाग 1 व 2
8) लोगस्स : ध्यान विधि (सीडी सहित)
9) अरिहंतवाणी

प्रवचन साहित्य

1) अहासुहं देवाणुप्पिया (श्री अंतकृत दशांग सूत्र पर विशेष प्रवचन)
2) संबुज्झह किं ण बुज्जह
3) नदी नाव संजोग
4) मा पमायए
5) अन्तर्यात्रा
6) शिवधारा

7) अनुश्रुति
8) सद्गुरू महिमा
9) पढमं नाणं

जैन तत्व विद्या

1) जैन ज्ञान प्रकाश (प्रश्नोत्तर शैली में जैन दर्शन का ज्ञान)
2) जैन तत्व कलिका विकास (नौ कलिकाओं में विभक्त जैन दर्शन)
3) जैन धर्म शिक्षावली, भाग 1 से 8 (बालकों के लिए विशेष)
4) अध्यात्म सार (आचारांग सूत्र पर दिव्यवाणी)
5) जिनशासनम् (श्रमण संघ इतिहास एवं आचार्यों का परिचय)

अंग्रजी साहित्य

1. The doctrine of Liberation in Indian Religions with Special reference to Jainism
2. Spiritual Practices of Lord Mahavira
3. Return to Self
4. The Jaina Pathway to Liberation
5. The Fundamental Principles of Jainism
6. The Doctrine of the self in Jainism
7. The Jaina Tradition
8. The Doctrine of Karma & Transmigration in Jainism
9. Self Development By Meditation
10. Self Meditation (Nature and Pratice)

जीवन चरित्र

1) प्रकाश पुंज महावीर (हिन्दी एवं पंजाबी)
2) शिवाचार्य जीवन दर्शन (अनुपलब्ध)
3) आधुनिक युग के सूर्य आचार्य शिवमुनि
4) स्व की यात्रा

प्रवचन गीत

1) शिवाचार्य प्रवचन गीत
2) सत्यम् शिवम् शुभम्
3) शिव भक्ति गंगा

पंजाबी साहित्य

चाननं मुनारां महावीर (भगवान महावीर का चरित्र)

सी.डी. एवं डी.वी.डी.

1) मुक्ति द्वार चातुर्मासिक प्रवचन (भाग से 100)
2) समाधि तंत्र
3) श्री उत्तराध्ययन सूत्र
4) सोऽहं
5) कोऽहं
6) शिवाऽहं
7) प्रार्थना एवं मंगल मैत्री
8) शिवाचार्य भजनामृत

9) शिव शुभम भजनामृत

10) जिनवाणी

11) अंतर्यात्रा

28. आचार्य श्री के सान्निध्य में आत्म ध्यान साधना शिविर - लगभग 800 शिविर सम्पन्न हुए जिसमें लाखों साधकों ने आत्म ध्यान साधना सीखी।

29. आचार्य श्री जी के पावन वर्षायोग -

क्रम संख्या	शहर का नाम	वर्ष
1.	मलेरकोटला, पंजाब	1972
2.	राहों, पंजाब	1973
3.	पटियाला , पंजाब	1974
4.	चंडीगढ़, पंजाब	1975
5.	खन्ना, पंजाब	1976
6.	राजपुरा, पंजाब	1977
7.	बरनाला, पंजाब	1978
8.	पंचकुला, हरियाणा	1979
9.	चंडीगढ़, पंजाब	1980
10.	रोपड़, पंजाब	1981
11.	मेरठ, उत्तर प्रदेश	1982
12.	वीरनगर, दिल्ली	1983
13.	जयपुर, राजस्थान	1984
14.	जोधपुर, राजस्थान	1985
15.	पुणे, महाराष्ट्र	1986
16.	खार, मुम्बई	1987
17.	सिकन्द्राबाद, तेलंगाना	1988
18.	बोलाराम	1989
19.	रायचूर	1990
20.	बैंगलोर, कर्नाटक	1991
21.	धोबीपेठ, चैन्नई	1992
22.	वेपेरी	1993
23.	पुणे, महाराष्ट्र	1994
24.	अहमदनगर, महाराष्ट्र	1995
25.	खार, मुम्बई	1996
26.	नासिक, महाराष्ट्र	1997
27.	औरंगाबाद, महाराष्ट्र	1998
28.	जालना, महाराष्ट्र	1999
29.	सूरत, गुजरात	2000
30.	वीरनगर, दिल्ली	2001
31.	लुधियाना, पंजाब	2002
32.	मलेरकोटला, पंजाब	2003

33.	चंडीगढ़, पंजाब	2004
34.	जालंधर, पंजाब	2005
35.	जम्मू	2006
36.	अम्बाला, हरियाणा	2007
37.	मलेरकोटला, पंजाब	2008
38.	ऋषभ विहार, दिल्ली	2009
39.	अरिहंत नगर, दिल्ली	2010
40.	वीरनगर, दिल्ली	2011
41.	लुधियाना, पंजाब	2012
42.	अशोक विहार, दिल्ली	2013
43.	प्रशांत विहार, दिल्ली	2014
44.	सूरत, गुजरात	2015
45.	भीलवाड़ा, राजस्थान	2016
46.	इन्दौर, मध्यप्रदेश	2017
47.	उदयपुर, राजस्थान	2018
48.	पुणे, महाराष्ट्र	2019
49.	आत्म भवन, बलेश्वर, सूरत, गुजरात	2020
50.	आत्म भवन, बलेश्वर, सूरत, गुजरात	2021
51.	आत्म भवन, बलेश्वर, सूरत, गुजरात	2022
52.	आत्म भवन, बलेश्वर, सूरत, गुजरात	2023
53.	आत्म भवन, बलेश्वर, सूरत, गुजरात	2024
54.	आत्म भवन, बलेश्वर, सूरत, गुजरात	2025
55.	आत्म भवन, बलेश्वर, सूरत, गुजरात	2026

Visit us our website : www.jainacharya.org Email : shivacharyaji@yahoo.co.in http://www.facebook.com/shivmuni
Android App : JAINACHARYA http://www.twitter.com/jainacharya http://www.youtube.com/ jainacharyaji
http://acharyashivmuni.blogspot.in/ Our contact no- 9350111542

युग पुरुष राष्ट्र संत आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज

1- समग्र जैन समाज में सबसे बड़े स्थानकवासी समुदाय के श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट्।

2- स्थानकवासी समाज में आत्म : ध्यान योग में विशेष खोजकर पूरे देश भर में ध्यान की जागति एवं वीतराग सामायिक का प्रचार।

3- आचार्यश्री आत्माराम जी महाराज के आगमों को नवीन रुप से संपादन एवं प्रकाशन कर स्वाध्याय के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान।

4- वृद्ध साधु-साध्वियों की सेवा एवं आत्म ध्यान साधना के प्रचार हेतु राष्टोय केन्द्र ''आदोश्वर धाम, कुप्पकलां'' के प्रेरक।

5- सर्व धर्म समन्वय एवं शाकाहार, व्यसन मुक्ति, बाल संस्कार, जीव दया, गौसेवा, अहिंसा की भावना से प्रभावित होकर ''सांई मींया मीर इण्टरनेशनल अवार्ड 2005'', ''महात्मा गांधो सर्विस अवार्ड 2006'', अन्तर्राष्टोय सर्व धर्म महासंघ के मुख्य संरक्षक, ''राष्ट्र गौरव 2018'', ''2019 सूर्यदर्त्ता अवार्ड'', डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ''विश्व शान्ति पुरस्कार 2020''

6- पद अलंकरण - युगपुरूष, युगप्रधान, आत्म-अनुशास्ता, राष्ट्रसंत, तपसूर्य, आगम-अतिधन्वा, योगीराज, आत्मज्ञानी सद्गुरूदेव, अध्यात्म ज्योति, ध्यानगुरू, विश्वसंत

6- वर्तमान में एक मात्र आचार्य जो पिछले 41 वर्षों से लगातार एकान्तर तप {एक दिन उपवास एक दिन पारणा} की तपस्या एवं आभ्यन्तर तप ध्यान और कायोत्सर्ग की विशेष आराधना कर रहे हैं।

7- पिछले 26 वर्षा से लगातार आपके आध्यात्मिक प्रवचन विभिन्न टी.वी. चैनलों एवं यूट्युब, फेसबुक के द्वारा देश भर में धार्मिक श्रद्धालुओं को आत्म ज्ञान और आत्म-ध्यान की ओर मोड़ रहे हैं। प्रतिदिन प्रवचन प्रातः 8.05 बजे से 8. 25 तक पारस चैनल पर।

8- आपश्रीजी की अंग्रेजी भाषा में 10 पुस्तकें एवं हिन्दी भाषा में करीब 30 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। भारतीय धर्मों में मोक्ष और ध्यान योग पर विशेष शोध कार्य एवं आत्म ध्यान की अनेक पुस्तकें, कैसेट्स और प्रवचन के डी.वी. डी. **''शिवाचार्य आत्म ध्यान फाउण्डेशन''** ने उपलब्ध कराए हैं और इस समिति के द्वारा पूरे देश विदेश में जैन धर्म एवं ध्यान योग के यूट्युब, फेसबुक, वेबसाईट से प्रचार प्रसार का कार्य हो रहा है।

9- आपके दिशा निर्देशन में सैकड़ों आत्म ध्यान शिविर लग रहे हैं जिसमें लाखों लोगों ने ध्यान योग का अनुभव प्राप्त किया है और उसके प्रचार के लिए अनेक प्रशिक्षक वर्ग भी सेवा कार्य में रत हैं।

आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनि जी महाराज

जैन धर्म दिवाकर, युगपुरुष, सद्गुरु युगप्रधान आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनि जी म. मानवता के विमल विभूषण हैं। पूज्यश्री के विराट विहंगम व्यक्तित्व में एक साथ मानवता, साधुता, सफल संघशास्ता आदि समस्त गुण सर्वांगीणता से पल्लवित और पुष्पित हुए हैं। आयुष्य के 79वें सोपान पर विचरणशील श्रद्धेय शिवाचार्य श्री में बालकों जैसी सरलता और तरलता, युवाओं जैसी ऊर्जा और उमंग, वृद्धो जैसी सदायशता और सूझ के दर्शन किये जा सकते हैं। आपकी यही विरलता आपको सर्वप्रिय और सर्वपूज्य बनाती है। एक बालक भी, एक युवक भी, और एक वृद्ध भी आपमें अपनत्व देखता है, अपने ही स्वरूप के दर्शन करता है।

आप्त-पुरुष श्रद्धेय शिवाचार्य श्री 79 वर्ष पूर्व इस भूतल पर अवतरित हुए। शस्य-श्यामल पंजाब की धर्मधरा हर्ष-मत्त होकर नाच उठी। जन्मभूमि का गौरव मिला मलौट की माटी को। पितृत्व का गौरव मिला महामना श्री चिरंजीलाल जी को। मातृत्व का सौभाग्य मिला भगवती विद्यादेवी को। शिव-संभावनाओं को विस्तार देते हुए शिव कदम-कदम आगे बढ़े। इनका सारा शैशव शिवत्व की सौरभ से सुरभित रहा। हरियाले यौवन में चरणन्यास किया। विलास-विलसित परिवेश में पल्लवित शिव-कमल विलास-जल से सदैव अस्पर्शित रहे। कॉलेज और विश्वविद्यालय के स्वच्छंद वातावरण भी शिवःछन्द को मद्धिम नहीं कर पाए। कनाडा, कुवैत, कैलिफोर्निया के आकर्षण शिव-कदमों की बेड़ी नहीं बन पाए। हर चरण पर शिव के भीतर प्रज्ज्वलित शिवत्व का प्रदीप अमन्द और निष्कम्प रहा।

17 मई सन् 1972 का दिन जिनशासन के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हुआ। इस दिन तीस वर्षीय युवा योगी शिव ने जिनशासन में स्वयं को संन्यस्त किया। सद्गुरु आत्म, सद्गुरु ज्ञान के प्रशिष्यत्व-शिष्यत्व में संन्यस्त शिव जिनशासन का एक सुरीला संयम-संगीत बनकर सकल संघ की आत्मा के अनहद नाद बन गए।

ज्ञान और ध्यान!

ध्यान और ज्ञान!

शिव की संयम-साधना शुष्क-रूक्ष परिपाटियों में सीमित नहीं रही। ज्ञान और ध्यान के क्षेत्र में आपने नए आयामों की रचना की। लौकिक ज्ञान के क्षेत्र में आपने Ph-D और D-Lit. के क्षितिज का स्पर्श किया। ध्यान के क्षेत्र में प्रायः सभी प्रचलितर पद्धतियों-विधियों को जांचा, परखा और अनुभव किया। तत्पश्चात् अन्वेषणा की ध्यान की शुद्धतप विधि आत्म-ध्यान में स्वयं गहरे-गहरे पैठे और लोक-मंगल के लिए आत्म-ध्यान शिविरों की स्थापना भी की।

ज्ञान और ध्यान की इस साधना-यात्रा के साथ आपकी तप यात्रा भी सतत जारी रही। विगत साढ़े तीन दशकों से आप एकान्तर तप की साधना कर रहे हैं। आपका यह प्रलम्ब तप कभी भी कष्ट-साध्य नहीं रहा। ध्यान को आप आत्म-विश्राम मानते हैं और तप को आत्मा की खुराक मानते हैं। अक्सर आप फरमाते हैं-तप और ध्यान परस्पर सुगुंफित हैं। दोनों की युति से ही सिद्धालय का द्वार खुलता हैं।

साधना के शिखरों पर आरोहण करते हुए पूज्य श्री भी कई संघीय दायित्वों को भी वहन करना पड़ा। उनमें सर्वोच्च दायित्व रहा-आचार्य पद का निर्वहन। सन् 1987 में श्रमणसंघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट श्री आनन्दऋषि जी महाराज ने आपको युवाचार्य जैसे गौरवशाली पद के लिए सर्वानुमति से मनोनीत किया। मात्र 15 वर्ष की दीक्षा-पर्याय में आप इस पद पर नियुक्त हुए। यह आपकी उच्च साधना और सर्वमान्यता, सर्वप्रियता का सबल प्रमाण हैं।

श्रद्धेय देवेन्द्राचार्य श्री के स्वर्गवास के पश्चात् आपने सन् 1999 में विधिवत् श्रमणसंघ का नेतृत्व संभाला। तब तक आप श्री तीर्थंकर महावीर की ध्यान-साधना से साक्षात्कार साध चुके थे। संघ में ध्यान के प्रचार-प्रसार को आपने प्रमुखता प्रदान की। आपके निर्देशन में आत्म-ध्यान का प्रभूत प्रचार-प्रसार हुआ। नियमित रूप से ध्यान शिविर लगाए गए। 1999 से प्रारंभ हुआ आत्म-ध्यान का मिशन आज महामिशन का रूप ले चुका है। प्रतिमाह सहस्त्रों मुमुक्षु आत्म-ध्यान में डुबकी लगाकर ''मैं आत्मा'' से परिचय साध रहे हैं। भेद ज्ञान की अनुभूति द्वारा वीतराग-साधना में आगे बढ़ रहे हैं।

वर्तमान में श्रद्धेय शिवाचार्य श्री के दिशा-निर्देशन में आत्म-कल्याण, जन-कल्याण, समाज-कल्याण, राष्ट्र-कल्याण एवं विश्व-कल्याण के लिए सप्त-सूत्री अभियान चलाया जा रहा है। सात-सूत्री अभियान के सप्त बिन्दु निम्न-रूपेण हैं -

1. वसुधैव कुटुम्बकम्।

2. विश्व-शान्ति के तीन सूत्र-अहिंसा, अनेकान्त और अपिरग्रह।

3. समृद्ध भारत का निर्माण

4. आत्म-दृष्टि सम्पन्न निष्काम, प्रेम, कृतज्ञतापूर्ण समाज का निर्माण।

5. आनंद, शान्ति, ज्ञानयुक्त व्यक्तित्व का निर्माण।

6. शुद्ध आहार, शाकाहार का प्रचार।

7. जीव-दया-प्रत्येक जीव की रक्षा का संकल्प।

आत्म-ध्यान के माध्यम से आत्म-दृष्टि यात्रा में इन सात सूत्रों पर विशेष फोकस किया जाता है। संघ और समाज में स्वकल्याण-सर्वकल्यासण का एक वातावरण निर्मित हो रहा है जिसके सूत्रधार श्रद्धेय शिवाचार्य श्री हैं।

श्रमण संघ की जिम्मेदारी को पूर्व करने के लिए आपने दीर्घ विहार कर इन्दौर पधारे। इन्दौर में लगभग 500 साधुओं के सम्मेलन में समाचारी को युगानुरूप बनाते हुए सबके संयम में सुदृढता लाने के लिए ऐतिहासिक निर्णय लिये व संगठन को मजबूत करते हुए दीर्घ दृष्टि से युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी का चयन कर आने वाले 25 वर्षों की सुन्दर व्यवस्था प्रदान की जिससे श्रमण संघ का ही नहीं सम्पूर्ण जिनशासन में आपकी प्रज्ञा एवं निर्णय की प्रशंसा हुई। आपके दिशा निर्देशन में श्रमण संघ चहुंमुखी विकास कर रहा है।

आत्म-कल्याण और सिद्धि के शिखर पर शेखरायमाण श्रद्धेय शिवाचार्य श्री की सदेह उपस्थिति भरतक्षेत्र का सौभाग्य है। यह सौभाग्य अखण्ड रहे, शाश्वत रहे, सदा सनातन रहे, जिनेश्वर प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं।

गौरवशाली व्यक्तित्व

आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज

श्रमण संस्कृति में जैन धर्म का प्रमुख एवं प्राचीन स्थान है। जैन धर्म की प्राचीन परम्परा में जहां तीर्थंकर भगवान हुए हैं वहां उनकी परम्परा को अगे बढ़ाने वाले युग प्रधान प्रभावक आचार्यों की एक लम्बी ृंखला श्वेताम्बर व दिगम्बर परम्परा में मिलती है। इन आचार्यों ने अपनी प्रज्ञा से भारत के इतिहास, परम्परा, धर्म, संस्कृति व साहित्य में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। जैन परम्परा में श्वेताम्बर स्थानकवासी परम्परा का अपना प्रमुख स्थान है। इस परम्परा में श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रमण संघ का प्रमुख योगदान रहा है। इस संघ के प्रथमाचार्य जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज थे। जिन्होंने सर्वप्रथम बीस आगमों पर हिन्दी टीका लिखी और हिन्दी के प्रथम टीकाकार बनें। आपने जैन धर्म पर 65 से ज्यादा ग्रन्थ हिन्दी में लिखकर हिन्दी साहित्य में अभूतपूर्व योगदान दिया है। द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनंद ऋषि जी महाराज एवं तृतीय पट्टधर आचार्य सम्राट पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज हुए हैं।

वर्तमान में श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर, आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज एक उच्चकोटि के ध्यान साधक एवं आत्मार्थी संत हैं। आपका जीवन असंख्य गुणरत्नों का अक्षय-कोष है। जो भी आपके सान्निध्य में पहुंच जाता है वह श्रद्धा और भावना से अभिभूत होकर सदैव के लिए धर्म की शरण में आ जाता है। आपका जीवन कांटों के बीच खिले हुए पुष्प के समान है। वर्तमान युग में मनुष्य शारीरकि एवं मानसिक स्तर पर तनावग्रस्त एवं रोगों की ओर बढ़ता जा रहा है। उसका मन व शरीर चिन्ता और दु:ख के वातावरण से परिपूर्ण है। आज मानव ने सुख और सुविधा के अत्यधिक साधन जुटाए परन्तु उसके जीवन में सुख के बजाय दु:ख का वातावरण निर्मित हुआ। ऐसे समय में समाज के समक्ष आत्मा के स्वरूप का बोध, शांति, सुख और आनंदमय जीवन जीने की कला का संदेश लेकर जन-जन तक सुगन्ध के रूप में प्रभावित कर रहा है आचार्य श्री जी का जीवन दर्शन।

व्यक्तित्व

गुलाब सा पुलकित चेहरा जिसके दर्शन कर निराश व्यक्ति में उत्साह एवं उमंग संचरित हो उठे, भास्कर सा दैदीप्यमान ललाट, ध्रुवसम तारों सी निश्छल आंखें, पुष्प सम मृदुल करुणा और वात्सल्य से भीगे हुए वचन, मूल आर्य जाति का प्रतिनिधित्व करती हुई गौर देह। इस बाह्य व्यक्तित्व के धनी हैं आचार्य श्री शिवमुनि जी महाराज।

धरा पर पदार्पण

धन्य हो उठी रानियां मण्डी (हरियाणा) ननिहाल पक्ष जिसे आपका जन्म स्थान कहलाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ एवं मलौटमण्डी (पंजाब) की भूमि जिसे पैतृक स्थल कहलाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 18 सितम्बर, 1942 का दिन पवित्र एवं शुभ हो गया, क्योंकि उस दिन आपका इस धरा पर पदार्पण हुआ। आपके जन्म से श्री चिरंजीलाल जी का पितृत्व संतुष्ट हुआ एवं माता श्री विद्यादेवी जी की कोख गौरवान्वित हुई। 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' इस उक्ति के अनुसार यथा नाम तथा गुण को दृष्टि में रखते हुए आपके बाह्य व्यक्तित्व को आपके भीतर अन्तरंग भावों की अभिव्यक्ति स्वरूप मंगल के अर्थ को लिए हुए शिव कुमार इस नाम से नामांकित किया गया।

स्वर्णिम आध्यात्मिक बचपन

बचपन से ही आप श्री जी धर्म में गहरी रुचि रखते थे। माता-पिता के संस्कार आपको सहज रूप से ही मिले थे। स्थानक में नित्य-प्रतिदिन आना-जाना, वहां पधारे हुए साधु-साध्वियों के प्रवचनों को श्रवण करना, उन्हें आहार-पानी के लिए घर ले जाना, धार्मिक चर्चाओं में भाग लेना यह रुचि बचपन से ही आप में थी। आप स्वयं तो साधु-साध्वियों के सान्निध्य में जाते ही थे, साथ-साथ अपनी मित्रमंडली एवं भाई-बहनों को भी ले जाते थे। आप श्री अपने ननिहाल रानियां में भी जाते तो उस समय भी आपके मन में गुरुजनों के प्रति आकर्षण रहता। प्रतिक्रमण, सामायिक इत्यादि आप स्थानक जाकर करते थे। ये बचपन के संस्कार बढ़ती हुई आयु के साथ-साथ और दृढ़ होते चले गये। आठवीं कक्षा में आपने अपने दो अन्य साथियों के साथ प्रतिज्ञा की कि हम शादी नहीं करेंगे। अपना जीवन स्व-पर कल्याण के लिए समर्पित कर देंगे। लगभग 14 वर्ष की आयु में उठे वो विचार युवावस्था आते-आते और गहरे होते चले गये। घर वालों ने आपकी अनेकों परीक्षायें लीं परन्तु आपके दृढ़ निश्चय के आगे पूरा परिवार नतमस्तक हो गया।

साधना पथ पर

'ज्ञानस्य फलम् विरति' ज्ञान का फल विरति है, यही बात आपके जीवन में भी घटित हुई, आपके मन में विचार उत्पन्न हुआ कि भगवान महावीर की साधना क्या है ? और मैं उसे अनुभव करना चाहता हूं। आपने अपने उस विचार को मूर्त रूप देने के लिए उस साधना के अनुभव को आत्मसात करने के लिए साधना पथ पर गतिमान होने का निश्चय किया। ये वैराग्य ज्ञान-गर्भित वैराग्य था। आचार्य सम्राट श्री शिवमुनि जी महाराज की दीक्षा 17 मई, 1972 को हुई। आप श्री ने जीवन के 30 वर्ष परिवार और समाज के बीच रहकर व्यतीत किए। इस काल में संसार की असारता को नजदीक से देखा। इस प्रकार विकसित यौवनकाल के अन्तर्प्रज्ञा की जागृति के आधार पर तीन भगिनियों के साथ भगवान महावीर के दर्शाए हुए सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र के मार्ग का अनुगमन करते हुए वीतरागता की ओर प्रयाण किया। आप श्री जी के दीक्षा गुरु परम पूज्य, बहुश्रुत, जैनागम रत्नाकर, राष्ट्र संत, श्रमण संघीय सलाहकार पूज्य श्री ज्ञान मुनि जी महाराज एक प्रखर मेधा के एक तेजस्वी ज्ञानी संत रत्न थे। उनका सम्पूर्ण जीवन हर दृष्टि से उज्ज्वल रहा है।

समीचीन अध्ययन

आप श्री संयम ग्रहण करने से पूर्व ही अंग्रेजी एवं दर्शन-शास्त्र में M.A. कर चुके थे। दीक्षा लेने के पश्चात् 'भारतीय धर्मों में मुक्ति की अवधारणा, जैन धर्म का विशिष्ट संदर्भ' इस विषय में Ph.D. की उपाधि प्राप्त की। आप समस्त स्थानकवासी जैन समाज में Ph.D. की उपाधि प्राप्त करने वाले प्रथम संत हैं। इसके पश्चात् 'विक्रम शिला विश्वविद्यालय, भागलपुर' ने 'ध्यान एक दिव्य साधना' पर D.Lit की मानद् उपाधि देकर आपको सम्मानित किया। अभी तक के समय में श्रमण संघ के Ph.D. पदवीधारी आप एकमात्र आचार्य हैं। जैन धर्म के आप गहन अध्येता एवं व्याख्याता हैं। आपने शोध ग्रन्थ लेखन के दौरान साहित्य को सामने रखकर जो अन्तर्दृष्टि विकसित की उसी के चलते आप श्री जी आगमों का तलस्पर्शी अध्ययन कर पाये।

आप श्री ने वैराग्य काल में विविध देशों की संस्कृति, उनके आचार-विचार एवं आदर्शों के समीचीन अध्ययन हेतु जैनेवा, टोरन्टो, कुवैत, कनाडा, अमेरिका आदि स्थानों की विदेश यात्रा की। व्यावहारिक ज्ञान के साथ-साथ आगम ज्ञान की गहरी प्यास आप श्री जी में सदा जागृत होती रही। आपके मन में एक अटूट अभिप्सा है सत्य को साक्षात् करने की जो किसी भव्य एवं आत्मार्थी संत में ही होती है।

कृतित्व

आप श्री का कृतित्व अति सौम्य, सरल एवं स्नेहमयी है जैसे सुरभित विकसित कमल का फूल। विचारों से आप प्रगतिशील एवं सर्व-धर्म-समभावी हैं। आप एक ओजस्वीवक्ता एवं कुशल लेखक हैं। आपके प्रवचन सूत्रवत् सीधे और हृदयस्पर्शी होते हैं। आपकी प्रवचन शैली में महावीर की अहिंसा, कृष्ण का कर्मयोग, जीसस का प्रेम, बुद्ध की करुणा, मोहम्मद का भाईचारा, आत्मसात होता है। जो भी आप बोलते है। वे वचन जीवन की आत्यन्तिक गहराई एवं अनुभूति से उद्‌बुद्ध होते हैं। जीवन को उसकी समग्रता में जानने, जीने और प्रयोग करने में आप एक जीवन्त प्रतीक हैं।

एक पौरुषीय व्यक्तित्व

पुरिसा ! परम चक्खु विपरिक्कमा।

'हे निर्मल ज्योति वाले पुरुष ! तू पुरुषार्थ कर, पराक्रम कर, अपने पांवों से जीवन पथ को नापता हुआ आगे बढ़।' आप श्री का जीवन भगवान के इस उद्‌घोष का एक साकार स्वरूप है। आपका पराक्रम एवं आपकी अप्रमत्तता विरल है। एक तरफ तो उग्र विहार साथ ही अविरत लगभग 25 वर्षों से एकान्तर तप का अनुष्ठान, दूसरी ओर उन्नत शिखरों को स्पर्श करती हुई आपकी यह प्रखर आत्म-ध्यान साधना। बाह्य एवं आभ्यन्तर तप का यह अद्‌भुत संगम शायद ही कहीं और देखने को मिले। यह इनका पुरुषार्थमय जीवन वास्तव में आज के युवा वर्ग के लिए एवं समस्त साधकगण के लिए एक उच्चतम एवं जीवन्त आदर्श स्थापित करता है।

अन्तरंग साधना

ध्यान और मुनि, मुनि और ध्यान। ये दो शब्द ऐसे हैं जैसे दीपक की बाती और उसका प्रकाश। जैसे सूर्य की किरणें और उसकी ऊर्जा। साधुत्व की सार्थकता, साधुत्व का बीज साधना में है जो निरन्तर स्वाध्याय एवं ध्यान में संलग्न रहता है वही भिक्षु है, वही साधु है, वही मुनि है। स्वाध्याय से ज्ञान के द्वार उद्‌घाटित होते हैं। साधना का मार्ग दर्शन प्राप्त होता है, उसी ज्ञान को स्वयं की अनुभूतियों पर उतारने का नाम ही ध्यान है। ध्यान वास्तव में स्वाध्याय द्वारा अर्जित द्रव्य श्रुत को भाव श्रुत में परिणमित करने की एक गहनतम प्रक्रिया है। इस साधना को स्वयं के अस्तित्व का अभिन्न अंग बनाया है। वर्तमान में आप स्वयं साधना करते हुए अनेक साधकों को इस मार्ग पर गतिमान कर रहे हैं। आत्म-ध्यान साधना के माध्यम से आपने प्रत्येक वर्ग के व्यक्तियों को एक दिशा दी है कि हम अपना प्रत्येक व्यवहार निभाते हुए भगवान महावीर के बताए हुए मार्ग पर किस प्रकार गतिशील हो सकते हैं। साधना के लिए हमारा यह व्यवहार बाधक नहीं बनता, बल्कि हम प्रत्येक कार्य करते हुए स्वयं को द्रष्टा मानें। जिससे हमारे कर्मों का बंधन नहीं होगा। आचार्य श्री जी ने साधकों को अपने जीवन के लक्ष्य की ओर दिशा तय करने का उपक्रम कराया है। साधक को भौतिकता से हटाकर भीतर की सम्पन्नता का अहसास करा रहे हैं और उसी कारण उनके मुख से उद्‌धृत हुए वचनों के पीछे अनुभूति का बल होता है जिस कारण उनके सम्पर्क में आने वाला व्यक्ति उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। इनका समग्र जीवन ध्यान-साधना में इस प्रकार डूब गया कि **वे ध्यान-साधना के एक स्वर्णिम अध्याय बन गये हैं।** आप श्री **'आत्म ध्यान-साधना कोर्स' के फाउण्डर** हैं जिसमें भगवान महावीर की साधना एवं उनके वचनामृतों का ही आधार है और जैन आगमों में विशेषतौर पर आचारांग सूत्र पर आधारित यह साधना है। वर्तमान अरिहंत श्री सीमंधर भगवान कृपा का फल है। अनेक भव्य जीवों को निश्चय सम्यक्त्व की ओर बढ़ रहे हैं, आत्म-ज्ञान व आत्म-ध्यान की ओर बढ़ रहे हैं।

युवाचार्य पद

सद्‌गुरु वही होता है जो सत्य प्राप्ति का मार्ग बतलाये जो केवल सत्य की परिभाषा करके रह जाये वह सद्‌गुरु नहीं होता। सत्य के स्वरूप की परिभाषा के साथ-साथ उस स्वरूप को कैसे उपलब्ध किया जाये, यह जो दर्शाये वही होता है सद्‌गुरु। ऐसे ही एक सद्‌गुरु हैं आचार्य श्री जी जो धर्म के सैद्धांतिक पक्ष के साथ-साथ उसके व्यावहारिक पक्ष को भी हमारे समक्ष रखते हैं। ऐसे अनेकानेक विशिष्ट गुणों से अलंकृत है आपका जीवन आपके व्यक्तित्व से प्रमुदित होकर मात्र पन्द्रह वर्ष की दीक्षा अवधि में पूना के

विशाल साधु-सम्मेलन में परम पूज्य महामहिम आचार्य सम्राट श्री आनंद ऋषि जी महाराज ने आपको 13 मई, 1987 को युवाचार्य पदवी से सुशोभित किया।

आचार्य पद

9 जून, 1999 अहमदनगर (महाराष्ट्र) में श्रमण संघीय विधानानुसार आप श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर आचार्य के रूप में अभिसिक्त हुए। विशाल चतुर्विध श्री संघ के नेतृत्व की जिम्मेदारी आपने संभाली। इस जिम्मेदारी के पश्चात् आप श्री जी ने चतुर्विध संघ के विकास हेतु विशिष्ट कार्यक्रम अपने हाथ में लेते हुए समग्र भारत भ्रमण की विहार-यात्रा का कार्यक्रम शुरू किया। करीब बीस हजार किलोमीटर की यात्रा आप तय कर चुके हैं। आपने पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश आदि क्षेत्रों में विचरण किया।

ध्यान-साधना एवं मंगल मैत्री अभियान

आपने ध्यान पद्धति के साथ-साथ जनमानस को अध्यात्म एवं मंगल मैत्री से जोड़ने के लिए एक विश्व मानव मंगल मैत्री अभियान प्रारंभ किया जिसके अन्तर्गत आत्म-ध्यान साधना कोर्स, सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन, बाल संस्कार, व्यसन मुक्ति अभियान, अहिंसा शाकाहार प्रचार-प्रसार, व्यक्तित्व विकास, धार्मिक समभाव एवं समन्वयात्मक दृष्टिकोण, पर्यावरण सुरक्षा, राष्ट्रीय एकता एवं सुरक्षा, आध्यात्मिक संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन, शास्त्र संपादन एवं साहित्य लेखन, पुरातन साहित्य के विषय में शोध संशोधन एवं पुनःमुद्रण तथा स्वाध्याय, धर्म एवं साधना के प्रशिक्षण कार्यक्रम। हर व्यक्ति इस अभियान से जुडकर अपने जीवन को सफल बना सकता है। इस अभियान में 'आत्म-ध्यान साधना कोर्स' के अनेकों शिविर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में लग रहे हैं जिसमें लोगों की शारीरिक एवं मानसिक व्याधियां दूर होने लगी है। मानव मात्र में मैत्री एवं प्रेम का वातावरण निर्मित हो रहा है एवं बड़ी संख्या में साधक वर्ग अपने मूल स्वभाव की ओर अभिमुख हो रहा है। साधना के गहरे अनुभव को लेकर वह अपने लक्ष्य सिद्धालय की ओर बढ़ रहा है। आप साधक वर्ग को समत्व में जीने की कला प्रदान कर रहे हैं ताकि व्यक्ति अपने सभी व्यावहारिक संबंधों एवं कार्यों को करते हुए बंधन से मुक्त हो सके। आचार्य श्री ने तीर्थंकरों की साधना को किस प्रकार अनुभव कर सकता है यह कार्य आपने उनके लिए सहज कर दिया है। इस देह में रहते हुए किस प्रकार देहातीत रहा जा सकता है। किस प्रकार हर क्षण समत्व की साधना में, परमात्मा की आराधना में एवं जागृति में बीते यह कला आप द्वारा साधना शिविरों में सहज ही प्रदान की जाती है। साधना शिविरों में आप सिखाते हैं कि किस प्रकार हम छोटे-बड़े, ऊँच-नीच का भेद मिटाकर सबको एक समान आदर दें। प्रत्येक जीव के लिए आपके हृदय में कोमलता है, आँखों मं वात्सल्यता एवं करुणा है, शब्दों में ऐसी ऊर्जा है कि मृतप्राय व्यक्तित्व भी नई ऊर्जा की चेतना से गतिमान हो उठता है। कभी-कभी किसी साधक को जगाने के लिए आप मातृवत कठोर भी हो जाते हैं जिसमें कि उस साधक का कल्याण ही निहित होता है।

ध्यान-साधना के प्रचार हेतु भगवान महावीर मेडीटेशन एण्ड रिसर्च सेंटर ट्रस्ट, श्री सरस्वती विद्या केन्द्र, आत्म-आनंद ध्यान केन्द्र आदीश्वर धाम कुप्पकलां आदि अनेकानेक संस्थाओं की आपने प्रेरणा प्रदान की। आपने अपने पितामह आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज के अनुपलब्ध आगमों को पुनः संपादित कर प्रकाशित करवाया है और ध्यान व अन्य विषयों पर आपने लगभग 22 पुस्तकें हिन्दी भाषां में और लगभग 10 पुस्तकें अंग्रेजी भाषा में लिखी हैं। आप बहुभाषाविद् बहुश्रुत आचार्य हैं। ध्यान-साधना से संबंधित ऑडियो, वीडियो कैसेट भी आप श्री की मधुर आवाज में उपलब्ध है।

राष्टोय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के संबंध

देश व विदेश की अनेकों हस्तियां आपके जीवन से प्रभावित हुई हैं जिनमें मदर टेरेसा, आर्ट ऑफ लिविंग के प्रणेता श्री श्री रविशंकर जी, सिद्ध समाधि योग के प्रणेता श्री ऋषि प्रभाकर जी, विपश्यना के संस्थापक कल्याण मित्र श्री सत्यनारायण जी गोयन्का, प्रकट ज्ञानी श्री कन्नू दादा जी आदि आध्यात्मिक पुरुषों का साधना के दृष्टिकोण से मिलन होता रहा है।

जैन एकता के कार्यक्रमों में समन्वय की दृष्टि से चारों सम्प्रदायों के प्रमुख आचार्यों जिसमें आचार्य श्री तुलसी जी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी, आचार्य श्री महाश्रमण जी, आचार्य श्री विद्यानंद जी, आचार्य श्री रत्नसुन्दर सूरीश्वर जी, आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी महाराज, गच्छाधिपति आचार्य श्री नित्यानंद जी महाराज, आचार्य श्री धर्मधुरन्धर जी महाराज, गणाधिपति श्री कुन्थुसागर जी, जम्बूद्वीप संस्थापिका गणिनी माता ज्ञानवती जी एवं स्थानकवासी परम्परा के प्रमुख आचार्य श्री आनंद ऋषि जी महाराज, आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज, उपाध्याय श्री अमर मुनि जी महाराज, आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज एवं प्रगतिवादी आचार्य श्री सुशील मुनि जी, आचार्य श्री विमल मुनि जी, आचार्य श्री चंदना जी आदि से जैन एकता के क्षेत्र में समय-समय पर मिलन होता रहा है।

उपरोक्त सभी महान व्यक्तित्व आपकी निर्मलता, सरलता, गुणग्राहकता, विनयशीलता एवं स्पष्टता से प्रभावित रहे हैं, विशेषकर ध्यान-साधना से।

समय-समय पर अनेकों जैन, अजैन विद्वान आप श्री जी से जैन दर्शन संबंधित एवं आत्म-ध्यान-साधना संबंधित मार्गदर्शन प्राप्त करते रहते हैं। विशेष स्कूलों का अध्यापक वर्ग, कॉलेज एवं विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर, लेखक, प्रबुद्ध विचारक, बुद्धिजीवी आपके जीवन एवं व्यक्तित्व से प्रभावित हैं।

साहित्य सर्जन

साहित्य दर्पण की भांति होता है। जैन साहित्य में कथानुयोग, गणितानुयोग, द्रव्यानुयोग आदि विधाएं हैं जिससे साधक प्रेरणा लेकर अपनी उन्नति एवं प्रगति करता है। अपने विचारों को दूसरों तक पहुंचाने के लिए प्राचीनतम तरीका है साहित्य। आचार्य श्री शिवमुनि जी महाराज जहां एक ध्यान साधक हैं, विद्वता के धनी हैं, जैन एवं जैनेतर दर्शनों को उन्हांने गहराई से अध्ययन किया है। बौद्धिक अध्ययन के साथ-साथ उनमें वर्णित साधना प्रयोगों को अपने अनुभव में भी उतारा है। उन्हीं अनुभवों के आधार पर निम्नलिखित पुस्तकों की रचना की है। लेखन के साथ-साथ आप श्री जी ने श्रमण संघ के प्रथम आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी के द्वारा टीकाकृत आगमों का वर्तमान में सम्पादन भी किया है। आगम सम्पादन की मौलिकता को बनाये रखते हुए आप श्री जी ने उसमें आधुनिक शैली का प्रयोग किया है। लगभग 18 से 20 आगमों का संपादन भी आप के द्वारा हुआ है।

निम्नलिखित पुस्तकों की रचना इस प्रकार है :-

1. भारतीय धर्मों में मोक्ष–यह आचार्य श्री जी का पी.एच.डी ग्रन्थ है। भारत के विभिन्न धर्मों में मोक्ष के प्रति क्या धारणा है। जैन दर्शन को अन्य भारतीय दर्शनों से तुलनात्मक अध्ययनल प्रस्तुत किया है। उपरोक्त शोध प्रबन्ध हिन्दी अंग्रेजी में उपलब्ध है एवं विशेष तौर पर जैन आगमों का सन्दर्भ देते हुए यह शोध प्रबन्ध पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला से पूर्ण हुआ है।

2. ध्यान एक दिव्य साधना–इस पुस्तक में ध्यान के गूढ़ रहस्य विभिन्न आगमों में ध्यान विषयक गाथाओं एवं श्लोकों का वर्णन महर्षि रमण एवं अन्य योगियों की ध्यान-साधना पद्धति एवं अन्य भारतीय दर्शनों में ध्यान सम्बन्धी अवधारणा को स्पष्ट किया गया है। यह आचार्य श्री जी का डी-लिट् ग्रन्थ है।

3. योग, मन, संस्कार–इस पुस्तक के अन्तर्गत आचार्य श्री ने विशेष तौर पर आहार एवं प्रतिक्रमण पर गहन चिन्तन प्रस्तुत किया है।

4. नदी नांव संयोग–इस पुस्तक में भाषा का एक प्रवाह है। विचारों की सौम्यता के साथ-साथ साधक के हृदय में गहराई से प्रवेश करते हैं। इस पुस्तक में विभिन्न गहनतम विषयों को सरलतम बनाया गया है।

5. आ घर लौट चले–वर्तमान में यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध हो रही है। इस पुस्तक में बाल-संस्कारों पर जोर दिया गया है। किस प्रकार हम गर्भ से ही आने वाले जीव को संस्कार दें और वो आने वाला जीव उन संस्कारों के माध्यम से महान व्यक्तित्व लेकर इस संसार के सामने उभरे। यह पुस्तक हिन्दी, अंग्रेजी में उपलब्ध है।

6. मा पमायए–इस पुस्तक में आचार्य श्री जी के प्रवचनों का संकल्प किया गया है। जिसमें आचार्य श्री जी प्रेरणा देते हैं कि उठो जागो और पा लो उसे जो सदा से तुम्हारे पास है। अन्तर्जागृति का शाश्वत संदेश इस पुस्तक में अनुभव होगा। विद्वद् पुरुषों क लिए यह पुस्तक प्रेरणा स्रोत है।

7. अहासुहं देवाणुप्पिया–इस पुस्तक में श्री अन्तकृत दशांग सूत्र पर आधारित विशेष प्रवचन शृंखला दी गयी है जो कि आगम के छिपे हुए रहस्यों को सुगमता से प्रकट करती हो।

8. ध्यान पथ–इस पुस्तक में साधक किस प्रकार ध्यान-साधना में आगे बढ़ सकता है। ध्यान-साधना का जीवन में क्या महत्व है आदि अनेक विषयों को स्पष्ट किया गया है।

9. जिनशासनम्–इस पुस्तक में आचार्य श्री जी ने जैन इतिहास, जैन धर्म, जैन श्रमण संघ, श्रमण संघ के आचार्य, साधु, श्रावक व आहार के साथ-साथ नौ तत्वों पर सारगर्भित शब्दाकृति दी है।

10. अध्यात्म सार–इस पुस्तक में साधना सूत्र पर आधारित आचारांग के विशेष सूत्रों को साधना की गहराइयों से अनुभूति में लाते हुए उन सूत्रों का अन्त:स्वरूप उद्घाटित किया है।

11. अन्तर्यात्रा–यह पुस्तक बाहर से भीतर लौटने की प्रेरणा देती है। इस पुस्तक में स्वस्थ जीवन जीने के सूत्रों का निरूपण किया गया है।

12. सद्गुरु महिमा–इस पुस्तक में देव, गुरु, धर्म, आत्मोपासना और आत्म-प्रेम के आगमीय आधार पर स्वरूप-सृजन की अक्षर-यात्रा है। जीवन में सद्गुरु का महत्व एवं सद्गुरु के प्रति भाव-दशा का वर्णन, हृदय को छू लेता है।

13. अमृत की खोज–इस पुस्तक में श्रद्धा, स्वयं की खोज, आत्म तत्व में अमरता का अहसास अनुभूति पर उतारती हुई प्रवचन शृंखला साधक को उस ओर बढ़ने के लिए उद्वेलित करता है।

14. पढणं नाणं–इस पुस्तक में मोक्ष मार्ग का आधार ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा कर्मवाद, आत्मवाद, अनेकान्तवाद प्रभृति जैन धर्म-दर्शन के मौलिक बिन्दुओं पर प्रचुर प्रकाश डालने वाली रचना। आचार्य श्री जी की प्रारंभिक तीन कृतियों - 'पढणं नाणं' 'अनुशीलन' एवं 'समयं गोयम मा पमायए' का यह संयुक्त संस्करण है।

15. प्रकाश पुञ्ज महावीर–यह पुस्तक भगवान महावीर का जीवन चरित्र है। भगवान महावीर के पथ पर चलते हुए उनकी साधना को स्वयं अनुभव करते हुए उस प्रकाश पुञ्ज का जीवन चरित्र सरल एवं आकर्षक शैली में प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक का प्रकाशन हिन्दी, अंग्रेजी और पंजाबी तीनों भाषाओं में हो चुका है। बच्चों के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।

उपरोक्त विवरण में आचार्य श्री जी की मुख्य–मख्य कृतियों का परिचय हमने दिया। ऐसी ही अन्य अनेक पुस्तकें आचार्य श्री जी की और भी हैं, उन पुस्तकों में आचार्य श्री जी के प्रवचन साधक को भीतर की गहराई में उतरने में सहयोगी हैं। प्रत्येक पुस्तक को पढ़तो हुआ व्यक्ति आचार्य श्री जी को अपने साथ जुड़ा पाता है। यही इन पुस्तकों की विशेषता है।

सार–आचार्य श्री जी के सम्पूर्ण जीवन पर अगर हम दृष्टिपात करें तो उनमें अनेक गुणों का समावेश परिलक्षित होता है। जैसे–माली अनेक सुगन्धित फूलों को चुनकर उनका एक गुलदस्ता बना देता है उसी प्रकार आचार्य भगवन् में अनेक गुण गुलदस्ते की भांति समाए हुए हैं। हँसता हुआ नूरानी चेहरा, स्नेहवर्षण करती हुई दो आँखें, मुख से निकलते हुए मातृवत स्नेह सिंचित वचन, साधना पथ पर निरंतर बढ़ने का दृढ़ निश्चय, साम्प्रदायिकता से रहित समाज में केवल आध्यात्मिकता का सूत्रपात करने वाले एवं व्यक्ति को अरिहंत परमात्मा से जोड़ने का प्रबल पुरुषार्थ करने वाले अनवरत 27 वर्षों से एकान्तर तपस्या करने वाले युगदृष्टा हैं आचार्य श्री जी।

Visit us our website : www.jainacharya.org www.shivacharyaji.org
Email : shivacharyaji@yahoo.co.in Shivacharyaji108@yahoo.com
Facebook : http://www.facebook.com/shivmuni
Twitter : http://www.twitter.com/jainacharya, Our contact no-9350111542